बाप समान फरिश्ता वर्ष

अव्यक्त मुरली रिवीजन – ज्वालामुखी योग (स)

16.09.2012

1. **स्वमान** – मैं लाइट हाउस और माइट हाउस हूँ।

- बाबा ने कहा है कि ज्वालामुखी योग अर्थात् लाइट हाउस और माइट हाउस की स्थिति...तो जैसे लाइट हाउस एक स्थान पर रहते भी निरंतर अपनी लाइट फैलाता रहता है, राह दिखाता रहता है, सदा ऊँचाई पर रहता है...वैसे ही हमें भी लाइट हाउस और माइट हाउस बनकर सारे संसार को सही राह दिखाना है...सदा अपनी ऊँची स्थिति के आसन पर सेट रहना है...।

2. **योगाभ्यास** –

अ. मैं लाइट हाउस और माइट हाउस हूँ...मुझसे निरंतर चारों ओर लाइट और माइट की किरणें फैल रही हैं...जिससे संसार से अज्ञान अंधकार दूर होता जा रहा है...सभी आत्माएं शक्तिशाली होती जा रही हैं...।

ब. मैं सर्वशक्तिवान शिव बाबा के साथ कम्बाइंड हूँ...पॉवर हाउस से अनंत शक्तियों की किरणें मेरे ऊपर आ रही हैं...मुझमें समाती जा रही हैं...और फिर मुझसे चारों ओर फैल रही हैं...।

स. मैं बाबा के साथ एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित हूँ...नीचे सभी मनुष्यात्माएँ खड़ी हैं...हमारी ओर प्यासी निगाहों से देख रही हैं...बाबा और मैं उन्हें सकाश दे रहे हैं...हमारी दृष्टि से लाइट और माइट निकलकर उन तक जा रही है...।

3. **धारणा – मैंपन का समर्पण**

- ज्वालामुखी योग के लिए मैंपन का समर्पण परम आवश्यक है। मैंपन ही सर्व समस्याओं की जननी है। तो हम अपने `मैंपन` को अर्पण कर उसकी जगह `बाबापन` ले आयें।

4. **चिंतन** –

- देहअभिमान और देहीअभिमानी स्थिति वालों की निशानी क्या होती है ?
- महीन मैंपन क्या-क्या हैं ? देहअभिमान वा मैंपन से क्या-क्या नुकसान हैं ?
- मैंपन का त्याग कैसे करें ? इसके लिए क्या अभ्यास करें ? ?

5. **साधकों प्रति** – प्रिय साधकों ! साधना का बीज है - बेहद की वैराग्य वृत्ति। जितना वैराग्य तीव्र होता है, उतना ही साधना में भी तीव्रता आती है। राग हमें संसार में बाँध देता है। बुद्धि भी दुनिया में ही भटकती रहती है। मन, मनमनाभव होने के बजाए तनमनाभव, धनमनाभव और जनमनाभव में रमा रहता है। बंदर की तरह यहाँ से वहाँ उछलता-कूदता रहता है। जो करना चाहिए वो ना करके बाकि वो सबकुछ करता रहता है जो उसे नहीं करना चाहिए। अतः हे साधकों, अब बेहद की वैराग्य वृत्ति को धारण करो ताकि परमधाम का दरवाजा जल्दी खुले और सभी आत्मायें वापस अपने घर में विश्राम कर सकें।